कल्लू कुम्हार की उनाकोटी (के० विक्रम सिंह)

पाठ का सारांश

लेखक की दिनचर्या–लेखक आमतौर पर सूर्योदय के साथ उठ जाता है। वह अपनी चाय खुद बनाता है और चाय तथा अख़बार लेकर फिर लंबी सुबह का आनंद लेता है। अख़बार की खबरों पर उसका विशेष ध्यान नहीं होता लेकिन यह कार्य उसके लिए एक ऊर्जादायी योग है। लेखक का विश्वास है कि इस कार्य से उसे एक दिन के लिए और उस दुनिया का सामना करने में मदद मिलती है, जिसका कोई सिर-पैर समझ पाने में अब वह खुद को असमर्थ पाता है।

उनाकोटी की याद–एक दिन सुबह लेखक एक कानफाड़ू आवाज़ सुनकर जाग गया। यह आवाज़ तोप दागने या बम फटने जैसी थी। उसने खिड़की खोलकर देखा तो आकाश बादलों से भरा था, बिजली चमक रही थी और बादल जोर-जोर से गरज रहे थे। इस गर्जन-तर्जन से लेखक को तीन साल पहले त्रिपुरा में उनाकोटी की एक शाम की याद आ गई।

लेखक की त्रिपुरा यात्रा का उद्देश्य–अपनी त्रिपुरा यात्रा के उद्देश्य को स्पष्ट करता हुआ लेखक बताता है कि दिसंबर, 1999 में 'ऑन द रोड' शीर्षक से तीन खंडों वाली एक टेलीविजन श्रृंखला बनाने के सिलसिले मे वह त्रिपुरा की राजधानी अगरतला गया था। दरअसल उसकी यह यात्रा राष्ट्रीय राजमार्ग-44, जो त्रिपुरा की समूची लंबाई में आर-पार जाता है, के माध्यम से त्रिपुरा के विकास संबंधी गतिविधियों की जानकारी से संबंधित थी।

त्रिपुरा का इतिहास एवं सामाजिक जीवन–लेखक ने बताया है कि त्रिपुरा की सीमा तीन ओर से बांग्लादेश से तथा उत्तर-पूर्वी सीमा मिज़ोरम से जुड़ी है। सोनामुरा, बेलोनिया, सबरूम और कैलाश शहर जैसे त्रिपुरा के अधिकांश शहरों के बांग्लादेश की सीमा से जुड़े होने के कारण बांग्लादेश से लोगों की अवैध आवाजाही है। इस कारण से वहाँ की जनसंख्या में भारी इजाफ़ा हुआ है। स्थानीय आदिवासियों में इस बात का असंतोष भी है। लेखक ने शूटिंग के बहाने त्रिपुरा के उज्जयंत महल के इतिहास पर भी निगाह डाली है। लेखक के अनुसार, त्रिपुरा में बहुधार्मिक समाज होने के कारण अलग-अलग धर्मों एवं विचारों की झलक दिखाई देती है।

स्थानीय लोगों से मुलाकात–त्रिपुरा में अगरतला के टीलियामुरा कस्बे में लेखक की मुलाकात स्थानीय कोकबारोक बोली के प्रसिद्ध लोकगायक एवं संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत हेमंत कुमार जमातिया से हुई। वहाँ के संगीत से प्रभावित लेखक को अचानक प्रसिद्ध संगीतकार एस०डी० बर्मन की याद आ गई, जो त्रिपुरा के एक राजपरिवार से संबंधित थे। यहीं पर एक और गायिका मंजु ऋषिदास से भी लेखक की मुलाकात हुई। लेखक बताता है कि गायिका मंजु ऋषिदास निरक्षर एवं अछूत समुदाय की महिला होते हुए भी नगर पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व करने वाली जनप्रतिनिधि और कुशल गृहिणी भी थीं। उन्होंने लेखक को चाय पिलाई। लेखक मंजु ऋषिदास के व्यक्तित्व से बेहद प्रभावित होता है और सामाजिक कार्यों में उनकी सहभागिता को त्रिपुरा की प्रगतिशील सोच से जोड़कर देखता है।

कृषि एवं उद्योग धंधों की जानकारी–इसी दौरान लेखक ने जाना कि उत्तरी त्रिपुरा में अगरबत्तियों के लिए बाँस की पतली सींकें तैयार की जाती हैं। उत्तरी त्रिपुरा जिले के जिलाधिकारी से लेखक को त्रिपुरा की कृषि व्यवस्था की जानकारी मिली और साथ ही उससे उनाकोटी में शूटिंग करने का आग्रह भी किया गया।

उनाकोटी की यात्रा एवं इतिहास–उनाकोटी का नाम आते ही लेखक जिज्ञासा से भर उठता है। लेखक को पता चला कि उनाकोटी सबसे बड़े शैव तीर्थों में से एक है। दंतकथा के अनुसार, उनाकोटी में शिव की एक कोटि (एक करोड़) से एक कम मूर्तियाँ हैं। यह इलाका दस वर्ग किलोमीटर ज़्यादा क्षेत्र में फैला हुआ है। यहाँ पहाड़ों को अंदर से काटकर उसके विशाल आधार पर मूर्तियाँ बनाई गई हैं। यहीं लेखक को कल्लू कुम्हार की अद्भुत शक्ति का पूर्ण परिचय मिलता है, जो लेखक के मन में गहरा प्रभाव छोड़ जाता है।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : पाठ के संदर्भ में उनाकोटी में स्थित गंगा-अवतरण की कथा को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : पौराणिक कथा के अनुसार उनाकोटी की एक विशाल चट्टान ऋषि भगीरथ की प्रार्थना पर स्वर्ग से पृथ्वी पर गंगा-अवतरण की कथा को चित्रित करती है। गंगा-अवतरण के धक्के से कहीं पृथ्वी धँसकर पाताल लोक न चली जाए, लिहाजा शिव को इसके लिए तैयार किया गया कि वे गंगा को अपनी जटाओं में उलझा लें और इसके बाद इसे धीरे-धीरे पृथ्वी पर बहने के लिए छोड़ दें। शिव ने यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। इस प्रकार पृथ्वी पर गंगा-अवतरण हुआ। शिव का चेहरा एक चट्टान पर बना है और उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली हैं।

प्रश्न 2 : गंगा-अवतरण की पौराणिक कथा त्याग, तपस्या और साहस का संदेश किस प्रकार देती है? 'कल्लू कुम्हार की उनाकोटी' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर : गंगा-अवतरण की पौराणिक कथा हमें त्याग, तपस्या और साहस का संदेश देती है। गंगा आराम से स्वर्ग में बहती थी। भगीरथ की प्रार्थना पर वह धरती पर आने के लिए तैयार हुई। इससे गंगा की उदारता का परिचय मिलता है। गंगा के अवतरण का धक्का बहुत जबरदस्त होगा। इस धक्के से धरती के पाताल में धँसने का भय था। प्रश्न था कि उस धक्के को कौन अपने ऊपर झेले और धरती को धँसने से बचाए। इसके लिए शिवजी से प्रार्थना की गई। भोले भंडारी शिव लोक-कल्याण के लिए इस धक्के को अपनी जटाओं पर झेलने के लिए तैयार हो गए। इससे उनके साहस, त्याग और तपस्वी हृदय का परिचय मिलता है। ये सभी घटनाएँ हमें भी त्याग, तपस्या और साहस अपनाने की प्रेरणा देती हैं।

प्रश्न 3 : कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से किस प्रकार जुड़ा?

उत्तर : कल्लू कुम्हार को उनाकोटी के पहाड़ों पर बनी मूर्तियों का निर्माता माना जाता है। कहा जाता है कि वह पार्वती का भक्त था और शिव-पार्वती के साथ कैलाश जाना चाहता था। पार्वती के कहने पर शिव ने कहा कि ठीक है, लेकिन इसके लिए मेरी एक शर्त होगी। शर्त यह है कि कल्लू कुम्हार को एक रात में शिव की एक कोटि मूर्तियाँ बनानी होंगी। कल्लू मूर्ति बनाने में जुट गया। प्रातः जब मूर्तियाँ गिनी गईं तो वे उनाकोटी निकलीं। इस प्रकार शर्त पूरी न करने के कारण शिव कल्लू को उनाकोटी में छोड़कर चले गए। इस प्रकार कल्लू का नाम इस स्थान से जुड़ा है।

प्रश्न 4 : 'मेरी रीढ़ में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई'–लेखक के इस कथन के पीछे कौन-सी घटना जुड़ी है?

उत्तर : टीलियामुरा से आगे का रास्ता हिंसाग्रस्त क्षेत्र से होकर गुजरता था। 83 किलोमीटर की यह यात्रा लेखक ने सी०आर०पी०एफ० की सुरक्षा में की। रास्ते में एक जवान ने निचली पहाड़ी पर रखे हुए दो पत्थरों की तरफ़ लेखक का ध्यान आकृष्ट करते हुए बताया कि दो दिन पहले उनका एक साथी जवान यहीं विद्रोहियों की गोली का शिकार हो गया था। यह सुनकर लेखक की रीढ़ तक भय की झुरझुरी दौड़ गई।

प्रश्न 5 : लेखक ने अपने यात्रा-वर्णन में त्रिपुरा के हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में अपने साहस एवं जिज्ञासा का क्या परिचय दिया है?

उत्तर : त्रिपुरा के हिंसाग्रस्त मुख्य भाग में प्रवेश से पहले लेखक का अंतिम पड़ाव टीलियामुरा था। आगे मनु नदी तक की यात्रा 83

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

किलोमीटर की थी। वहाँ तक राष्ट्रीय राजमार्ग-44 पर ट्रैफ़िक सी०आर०पी०एफ० की सुरक्षा के अंदर काफ़िलों के रूप में चलता है। लेखक ने वहाँ के मुख्य सचिव से काफ़िले से आगे चलने का निवेदन किया। पहले इनकार करके बाद में लेखक को इसकी आज्ञा मिल गई। यद्यपि लेखक और उनके पूरे दल को हथियारबंद गाड़ी में चलने का आदेश दिया गया।

लेखक काफ़िले के साथ चला। वह शूटिंग में इतना व्यस्त था कि मन में डर के लिए कोई स्थान नहीं था। तभी सी०आर०पी०एफ० कर्मी द्वारा बताया गया कि दो दिन पहले उनका एक जवान यहाँ मारा गया। यह सुनते ही लेखक के शरीर में डर की एक लहर-सी दौड़ गई। वह यह सोचने पर विवश हो गया कि इन सुंदर जंगलों के मध्य मृत्यु देने वाले विद्रोही भी छिपे हैं।

प्रश्न 6 : 'सभी संस्कृतियों का सम्मान करना ही वास्तव में मानव-धर्म है।'–'कल्लू कुम्हार की उनाकोटी' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।

उत्तर : त्रिपुरा भारत का वह क्षेत्र है, जिसमें न केवल 19 जनजातियाँ निवास करती हैं बल्कि विश्व के चार बड़े धर्मों के पूजा-स्थल भी विद्यमान हैं। पिछले अनेक दशकों से यहाँ बाहर के लोगों का आगमन और निवास बढ़ता जा रहा है। त्रिपुरा तीन ओर से बांग्लादेश से घिरा हुआ है। इसलिए बांग्लादेशी लोग यहाँ बहुतायत में घुसपैठ कर रहे हैं। असम के लोग भी यहाँ बसे हैं। इस प्रकार मूल निवासियों की संस्कृति बदल गई है। वे बाहरी लोगों के सामने कमज़ोर हो गए हैं। इसलिए आजकल उनमें संघर्ष बढ़ गया है। कुछ घटनाओं को छोड़ दें तो यह प्रदेश बहुधर्मी हो गया है। उन्हें एक-दूसरे का सम्मान करते हुए रहना आ गया है। अपने विरोधियों, विधर्मियों के संग प्रेम से रहना सच्चा मानव-धर्म है। त्रिपुरा इस धर्म का बखूबी पालन कर रहा है।

प्रश्न 7 : त्रिपुरा 'बहुधार्मिक' समाज का उदाहरण कैसे बना?

उत्तर : त्रिपुरा में बाहरी लोगों के आने से समस्याएँ तो उत्पन्न हुई हैं, लेकिन इसके कारण यह राज्य बहुधार्मिक समाज का उदाहरण भी बन गया है। त्रिपुरा में उन्नीस अनुसूचित जनजातियाँ हैं और यहाँ संसार के चारों बड़े धर्मों का प्रतिनिधित्व मौजूद है।

प्रश्न 8 : टीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय किन दो प्रमुख हस्तियों से हुआ? समाज-कल्याण के कार्यों में उनका क्या योगदान था?

उत्तर : टीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय प्रसिद्ध लोकगायक हेमंत कुमार जमातिया और गायिका मंजु ऋषिदास से हुआ। हेमंत कुमार पहले कभी पीपुल्स लिबरेशन ऑर्गेनाइज़ेशन के कार्यकर्ता थे, पर अब वे जिला परिषद् के सदस्य बन गए थे।

मंजु ऋषिदास निरक्षर होने के बावजूद नगर पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व करती थीं। उन्होंने अपने वार्ड में स्वच्छ पेयजल पहुँचाने हेतु नल लगवाने और मुख्य गलियों में ईंटें बिछवाने जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य करवाए थे।

प्रश्न 9 : लेखक ने त्रिपुरा में कहाँ और किस प्रकार शूटिंग की?

उत्तर : सबसे पहले त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में लेखक ने तीन दिन तक शूटिंग की। लेखक को आसपास जो भी दृश्य सुंदर दिखे जैसे उज्जयंत महल तथा बौद्ध मंदिर। लेखक ने वहाँ भी शूटिंग की। बाद में लेखक लोकनायक हेमंत कुमार जमातिया से मिला। उनके गाने के साथ शूटिंग की। लेखक की मुलाकात गायिका मंजु ऋषिदास से भी हुई जो थी वो निरक्षर व अछूत, मगर अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व कर रहीं थीं। उनके साथ भी कुछ दृश्यों को शूट किया गया। सी०आर०पी०एफ० का सहयोग लेखक के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुआ। उनके कारण लेखक राष्ट्रीय राजमार्ग-44 की भी शूटिंग कर पाया। इन्हीं के साथ की वजह से लेखक ने हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में जाकर वहाँ भी शूटिंग की।

उसके बाद लेखक ने त्रिपुरा की खूबसूरत मनु नदी के विहंगम सौंदर्य को भी अपने कैमरे में उतारा और वहाँ भी शूटिंग की। लेखक को उत्तरी त्रिपुरा के जिलाधिकारी का भी सहयोग प्राप्त हुआ। उसके कारण लेखक उनाकोटी भी गया और भारत की सबसे बड़ी शिव प्रतिमा 'आधार मूर्ति' के दर्शन किए। उनाकोटी में लेखक को कई शिव मूर्तियाँ मिलीं। उन सबको ही लेखक ने अपनी शूटिंग का हिस्सा बनाया। त्रिपुरा के प्रमुख दर्शनीय स्थल, हिंसाग्रस्त क्षेत्र, राष्ट्रीय राजमार्ग-44, मनु नदी, सी०आर०पी०एफ० तथा उनाकोटी की शिवमूर्तियाँ सभी को शूटिंग में सम्मिलित किया गया।

प्रश्न 10 : कैलाश शहर के जिलाधिकारी ने आलू की खेती के विषय में लेखक को क्या जानकारी दी?

उत्तर : कैलाश शहर के जिलाधिकारी ने लेखक को बताया कि आमतौर पर आलू की बुआई के लिए पारंपरिक आलू के बीजों की ज़रूरत दो मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर होती है। जबकि टी०पी०एस० (ट्रू पोटेटो सीड्स) की 100 ग्राम मात्र एक हेक्टेयर के लिए काफ़ी होती है। त्रिपुरा से टी०पी०एस० का निर्यात असम, मिजोरम, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश को ही नहीं बल्कि बांग्लादेश, मलेशिया और वियतनाम को भी किया जा रहा है।

प्रश्न 11 : शूटिंग समाप्त होने के पश्चात् अचानक ऐसा क्या हुआ, जिसका लेखक के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा?

उत्तर : लेखक टी०वी० सीरियल बनाता था। इस काम के लिए उसे यहाँ-वहाँ, दूसरे शहरों में, भिन्न-भिन्न राज्यों में शूटिंग के लिए जाना पड़ता था। लेखक द्वारा निर्मित टी०वी० सीरियल 'ऑन-द-रोड' के लिए उन्हें उनाकोटी जाना पड़ा था। लेखक ने अपने दल के साथ भिन्न-भिन्न स्थानों पर शूटिंग की थी। शूटिंग समाप्त होते-होते शाम के चार बज गए थे। तभी लेखक ने महसूस किया कि उनाकोटी में अचानक अँधेरा छा गया। देखते-देखते काले बादल भी घिरने लगे। जब तक उन लोगों ने अपने शूटिंग के उपकरण, सामान इत्यादि समेटा, तब तक अचानक बादल बरसने लगे। लेखक ने इसे शिव का तांडव कहा है। उनाकोटी की उस शाम की घनघोर वर्षा ने लेखक की स्मृति में स्थान तब पाया, जब वह दिल्ली में था। यहाँ भी लेखक ने वही दृश्य देखा था। बादलों का अचानक घिर आना और फिर गर्जन-तर्जन के साथ वर्षा होना। यहाँ भी प्रकृति का वहीं तांडव था, जो उनाकोटी में था। इस प्रकार तीन साल पहले और उस दिन के वातावरण में लेखक के मानस-पटल पर अत्यधिक गहरा प्रभाव डाला।

प्रश्न 12 : 'कठिन भौगोलिक स्थिति में रहने के बाद भी त्रिपुरा के लोग भारत से अधिक जुड़े हैं।'–'कल्लू कुम्हार की उनाकोटी' के आधार पर कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : त्रिपुरा तीन ओर से बांग्लादेश से घिरा हुआ है। भारत से उसका जुड़ाव असम के दुर्गम क्षेत्रों से होकर है। फिर भी त्रिपुरा के लोग भारत और भारतीय संस्कृति से जुड़े हैं। अगरतला की पहचान मंदिरों और महलों के कारण होती रही है। वहाँ का मुख्य महल उज्जयंत है, जहाँ भी विधानसभा बैठती है। अगरतला के बाहरी हिस्से में बौद्ध मंदिर है। कुल 19 कबीलों में से 2 कबीले–चकमा और मधु महावानी बौद्ध हैं। विश्व की सबसे बड़ी शिव-मूर्ति त्रिपुरा में है। यहाँ भगवान शिव की एक नहीं, करोड़ मूर्तियाँ हैं। यही कारण है कि लोगों के मन में भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था और सम्मान है। वे हृदय से भारत से जुड़े हुए हैं।

प्रश्न 13 : 'कल्लू कुम्हार की उनाकोटी' पाठ में लेखक ने त्रिपुरा के विषय में जो बताया, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में 'त्रिपुरा' भी एक राज्य है। इस राज्य की सीमाएँ असम और मिजोरम से जुड़ी हैं। यह राज्य तीन तरफ

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

से बांग्लादेश की सीमा से जुड़ा है। बांग्लादेशी यहाँ अवैध रूप से आ बसे हैं। यह भी यहाँ की जनसंख्या वृद्धि का एक कारण है। लेखक ने त्रिपुरा में कई स्थानों पर शूटिंग की थी। उज्जयंत महल पर भी शूटिंग हुई। पहले यहाँ राजशासन था। माणिक्य लोग त्रिपुरा पर शासन करते थे। यह राज्य बहुधर्मी है यानी भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग यहाँ बसते हैं। प्रसिद्ध संगीतकार एस०डी० बर्मन भी यहीं से थे। उनके संगीत की धुनें यहाँ गूँजा करती थीं। यहीं पर लेखक को हेमंत कुमार जमातिया व मंजु ऋषिदास जैसे गायक मिले। यहाँ अधिकतर सुरक्षा का कार्य, ट्रैफिक-नियंत्रण, विद्रोहियों का सामना–यह सब कार्य सी०आर०पी०एफ० के कर्मी करते हैं। कभी-कभी अपना कर्तव्य निभाते-निभाते इन्हें कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। यहाँ तक कि कभी-कभी कर्मियों की मृत्यु भी हो जाती है। इनके कंधों पर राज्य की भारी ज़िम्मेदारी है। त्रिपुरा के लोगों का मुख्य उद्योग अगरबत्तियों के लिए बाँस की सीखें तैयार करना है। ये सीखें कर्नाटक इत्यादि राज्यों में भेजी जाती हैं, जहाँ अगरबत्तियाँ बनाई जाती हैं। त्रिपुरा में मुख्यतः आलू की खेती की जाती है। उनाकोटी शिव-मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है। वहाँ भारत की सबसे बड़ी शिव प्रतिमा आधार मूर्ति है। उनाकोटी में कल्लू कुम्हार ने शिव की कोटी से एक कम मूर्तियाँ बनाई थीं। एक कम होने के कारण 'शिव' उसे कैलाश पर्वत पर नहीं ले गए थे। गंगा अवतरण के बाद शिवजी ने इसे अपनी जटाओं में धारण किया था। शिवजी की जटाओं को पत्थर की चट्टानों पर फैला हुआ दिखाया गया है।

प्रश्न 14 : मंजु ऋषिदास के जीवन से किन मूल्यों की प्रेरणा मिलती है? 'कल्लू कुम्हार की उनाकोटी' के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर : मंजु ऋषिदास त्रिपुरा की प्रसिद्ध गायिका हैं। ऋषिदास मोचियों के एक समुदाय का नाम है। मंजु बहुत आकर्षक व्यक्तित्व की महिला हैं। वह रेडियो कलाकार होने के साथ-साथ जन-प्रतिनिधि भी है। वह नगर-पंचायत में अपने वार्ड की प्रतिनिधि है। प्रतिनिधि होने के नाते उसे अपने वार्ड की मूलभूत समस्याओं का पूरा परिचय है। उसने हर घर तक स्वच्छ पानी पहुँचाने और मुख्य गलियों में ईंट बिछाने के काम के लिए नगर-पंचायत को राजी कर लिया है। उसकी कथा सुनकर हमें भी कल्याणकारी कार्य के लिए अपना जीवन लगाने की प्रेरणा मिलती है। हम चाहे कितने भी सफल नागरिक हों, किंतु जन-कल्याण के लिए हमारा योगदान होना ही चाहिए।

प्रश्न 15 : त्रिपुरा के घरेलू उद्योगों पर प्रकाश डालते हुए अपनी जानकारी के कुछ अन्य घरेलू उद्योगों के विषय में बताइए।

उत्तर : त्रिपुरा के घरेलू उद्योगों में अगरबत्तियों के लिए बाँस की पतली सींके तैयार करना तथा ढोल, तबला आदि की मरम्मत का काम करना है। कुर्सियाँ बुनना, चटाई बनाना, अचार मुरब्बा बनाना, लिफाफा बनाना आदि घरेलू उद्योगों में आते हैं।

प्रश्न 16 : 'कल्लू कुम्हार की उनाकोटी' पाठ का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर : 'कल्लू कुम्हार की उनाकोटी' एक यात्रा-वृतांत है। लेखक के० विक्रम सिंह एक टी०वी० कार्यक्रम की शूटिंग करने त्रिपुरा गए थे। प्रस्तुत पाठ में उन्होंने त्रिपुरा की भौगोलिक स्थिति, संस्कृति, वहाँ के जनजातीय समाज, संगीत, वाद्य यंत्र, घरेलू उद्योग-धंधे, आधुनिक कृषि परंपरा, धार्मिक रीतिरिवाज और मान्यताओं का संक्षिप्त परंतु रोचक वर्णन प्रस्तुत किया है। पाठ को पढ़कर पाठकों को बुद्ध और शिव की महिमा से संपन्न देश के इस सीमावर्ती राज्य के विषय में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त हो जाती है।

प्रश्न 17 : 'कल्लू कुम्हार की उनाकोटी' पाठ के लेखक ने अपने दिमाग की तुलना किससे की है और क्यों?

उत्तर : लेखक ने अपने दिमाग की तुलना 'कटी पतंग' से की है, जिसे वह खुला छोड़ देना चाहता है। लेखक सुबह की सैर पर न जाकर अपने लिए स्वयं ही चाय बनाता है और फिर अखबार के साथ चाय की चुस्कियों का मज़ा लेता है। अखबार पकड़ना तो एक बहाना है जबकि लेखक का दिमाग इस समय इधर-उधर की उड़ान भर रहा होता है। जैसे एक पतंग वायु की तेज़ लहरों के कारण हवा में इधर-उधर तैरती रहती है, उसी प्रकार लेखक अपने दिमाग को आज़ाद छोड़कर हवा में तैरने देता है। इससे लेखक पर काफ़ी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और वह स्वयं को तरो-ताज़ा महसूस करने लगता है। दिमाग को खुला छोड़ देना ही लेखक की दृष्टि में 'कटी-पतंग योग' है। इससे लेखक को एक और दिन के लिए दुनिया का सामना करने में मदद मिलती है–ऐसी दुनिया जिसके दाँव-पेच, उतार-चढ़ाव लेखक के लिए उसकी समझ से परे.

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in